समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक

डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक

प्रो. रमा

संपादक

डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग

रीमा प्रजापति

ले-आउट

स्कोप सर्विसेज, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय

मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार

एफ-114, तृतीय तल, SLF वेद विहार,
नियर: शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता

आजीवन : 5000/-रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
E-mail : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण

हरिन्द्र तिवारी

हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakshan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

विभाजन की त्रासदी और मंटो 7
विजय पालीवाल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का विश्लेषणात्मक अध्ययन 11
डॉ. अजीत कुमार बोहत

स्त्री अस्मिता संघर्ष और राजकमल चौधरी का हिंदी कथा साहित्य 15
अजीत सिंह

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की इतिहास-दृष्टि 18
डॉ. अमित सिन्हा

मध्यवर्गीय जीवन और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का कहानी संग्रह 'आधा कमरा' 20
अनिता देवी

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका 23
डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

राहुल सांकृयायन का यात्रावृत्त साहित्य में वर्णित धार्मिक पक्ष 27
अरूण माधीवाल

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के पक्षधर : सुब्रह्मण्य भारतीय 30
डॉ. के. बालराजू

नेतृत्व और सम्प्रेषण का यथार्थ 34
डॉ. कुमार भास्कर

नयी कविता और कुँवर नारायण 37
भावना

आधुनिक दिल्ली हिंदी रंगमंच का स्वरूप 40
डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह

स्त्री अस्मिता का मिथक 43
गजेन्द्र पाठक

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत-नेपाल संबंध 45
डॉ. गौरव कुमार शर्मा

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित का सामाजिक-बोध 47
गौतम कुमार खटीक

भारत में राजनीतिक विकास एवं संविधान संशोधन : एक विश्लेषण 50
गोविन्द नैनीवाल

भारत में जलवायु परिवर्तन एवं सरकारी नीतियां 54
हंसा मीना

बेटी उपन्यास में बेटी की गौरव गाथा 57
डॉ. कमलेश कुमारी

रामवृक्ष बेनीपुरी के गद्य साहित्य की भाषा 59
डॉ. करतार सिंह

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त 62
डा. राम किंकर पाण्डेय

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित*

सोहन लाल 'रामरंग' विरचित 'उत्तर साकेत' महाकाव्य में रस-निरूपण 65
डॉ. मधु शर्मा

सिनेमा में कैमरे की भाषा 69
महेश सिंह

महिला सशक्तिकरण 72
डॉ. मंजू ठाकुर

भाषा विमर्श और गाँधी 74
प्रभंजन कुमार झा

आधुनिकता और समकालीनता का अंतर्संबंध 76
डॉ. प्रवेश कुमार

राजस्थान में पुलिस मित्र योजना : एक अवलोकन 80
राहुल वर्मा

असहमति की दृढ़ता और ख़ामोशियों का शिल्पकार : निर्मल वर्मा 82
प्रो. रामेश्वर राय

उम्मीद बनी रहेगी तब तक... 84
रश्मि नरताम

भारतीय बोलियों की उपेक्षा, भाषा का मानकीकरण और राजनीति 88
डा. रिम्पी खिल्लन सिंह

केदारनाथ सिंह के काव्य में प्रकृति 91
डॉ. रूपेश कुमार

सुषम बेदी के उपन्यास में स्त्री-मन की पीड़ा ('मैंने नाता तोड़ा' के विशेष संदर्भ में) 94
संगीता यादव

आंचलिकता का प्रतिनिधि उपन्यास 'मैला आँचल' : एक विश्लेषण 96
डॉ. श्रुति शर्मा

अफगानिस्तान की परिवर्तित स्थिति का भारत पर प्रभाव 98
डॉ.सोनाली सिंह

हिंदी, उर्दू एवं पंजाबी कहानियों में भारत विभाजन की त्रासदी: एक अध्ययन 103
सुकांत सुमन

उपनिषदों में सृष्ट्युत्पत्ति विद्या 107
डॉ. उमा शर्मा

'रेणु की 'कहानी' और राजनीति' 110
विजय यादव

निराला की लम्बी कविताओं की शिल्पगत विशेषताएं 112
डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह

'पहला राजा' : मिथक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ 117
डॉ. विपुल कुमार

तीसरी सत्ता की मार्मिक दास्तान : पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा 120
डॉ. यशपाल सिंह राठौड़

महिलाओं के घरेलू कार्यों का राष्ट्रीय विकास में योगदान: आर्थिक पहचान का नया दौर 124
डा. सुनीता पारीक

भक्तिकालीन संतो का साहित्यिक योगदान 127
डॉ. अनिता वेताल

भारत में समावेशी शिक्षा : एक विवेचनात्मक अध्ययन 130
नीति/डॉ प्रतिभा रानी सिंह

अज्ञेय की प्रयोगशील कविता 133
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप और उद्देश्य: एक संक्षिप्त अवलोकन 136
राहुल कुमार झा

वैकल्पिक महिला आरक्षण विधेयक 138
डॉ. स्वाति कुमारी

प्रभा खेतान लिखित उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में स्त्री विमर्श 140
डॉ. सरोज पाटील

नई शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण 143
डा. कालिंदी लालचंदानी

'मुस्लिम महिलाओं की त्रासदी' 145
(उपन्यास 'हलाला' एवं आना इस देश के विशेष संदर्भ में)
शहनाज़ सय्यद

भारत में संविधान के नीति-निदेशक तत्व एवं सम्पोषणीय विकास 148
डा. अशोक कुमार/डॉ. राजीव सागर

आहत मुद्राओं के मूल्यवर्ग एवं बाजार मूल्य तथा उनका पारस्परिक संबंध 151
प्रीति सिंह

समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन संघर्ष ('धरती धन न अपना' के विशेष संदर्भ में) 154
डॉ. नवनाथ गाड़ेकर

कोच्ची मुज़िरिस बिएन्नाले में प्रदर्शित कुछ प्रमुख इंस्टालेशन आर्ट: चतुर्थ संस्करण के विशेष संदर्भ में 156
शिखा सोनकर

जगदीश चंद्र माथुर के एकांकियों में सामाजिक यथार्थ एवं कलात्मकता 160
डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

क्षेत्रवाद, राजनीतिक अपराधीकरण, साम्प्रदायिकता और जातिवाद का प्रभाव 163
नीशू

दिल्ली सल्तनत की कानूनी व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन 166
डॉ. रिनी पुण्डीर

शिक्षा का समावेशीकरण : एक अध्ययन 169
डा.अलका सक्सेना

जनजातीय सांस्कृतिक परम्पराएं : प्रासंगिकता एवं संभावनाएं 171
डा. नरेश सिंह

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में ''बरेली के मुंशी शोभाराम और खान बहादुर खाँ का योगदान'' 173
कुलदीप गंगवार

हिंदी नाटक में गांधीवाद की अभिव्यक्ति (विशेष संदर्भ-प्रसादोत्तर नाटक) 176
डा. अवधेश कुमार

भारत में महिला शिक्षा एवं इसका महत्त्व 179
बबिता खाती

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में मानवीय संवेदना का शैक्षणिक पक्ष 182
अनिल कुमार

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में रूस की स्थिति: एक राजनीतिक विश्लेषण 185
शैलेन्द्र कुमार

शैक्षिक प्रगति और राजनीतिक विमुखता 188
डॉ. संदीप कुमार अत्री

शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा अनुसूचित जातियों में सामाजिक समावेशन का अध्ययन 190
अखिलेश कुमार पटेल/डॉ. यतीन्द्र मिश्रा

'परख' उपन्यास के नारी पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 193
सिमरन भारती

वर्तमान युग में तथागत गौतम बुद्ध के विचारों की उपादेयता 195
डॉ. माया शंकर

वैश्विक मंच पर बढ़ता हिन्दी भाषा का प्रभाव 198
डॉ. शशांक कुमार सिंह

मैत्रेयी पुष्पा और नारी अस्मिता के प्रश्न 200
डॉ. ज्योति गौतम

गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में वैयक्तिक-प्रेम की अभिव्यक्ति का स्वरूप 203
चोवाराम यदु/डॉ. आर.के. पाण्डेय

केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका में प्रतिचित्रण का विवेचनात्मक अध्ययन 205
कृपा शंकर

भारत-अफ़ग़ानिस्तान सम्बन्धों का समीक्षात्मक अध्ययन 207
डॉ. पुष्कर पांडे

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियों में 'माँ' के रूप में नारी : एक दृष्टि 210
डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह

'त्यागपत्र' उपन्यास में सामाजिक रुढ़ियाँ और नारी 213
डॉ. चन्द्रशेखर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा 215
डॉ. लाजो पाण्डेय

भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धों के परिवर्तित होते आयाम : एक समीक्षा 217
डॉ. नलिनी लता सचान

डा. बाबासाहब भीमराव अंबेडकर और बुद्धिज्म: नवयान 220
राजीव कुमार पाण्डेय

धर्म की पुनर्व्याख्या करता मधु कांकरिया का उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' 223
डॉ. कामना पण्ड्या

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा का प्रभाव 225
डॉ. सरोज राय

प्रतापगढ़ जनपद में कृषिगत विविधता एवं इसके विकास में जल संसाधन की भूमिका 227
कौशलेन्द्र सिंह

भारत में राज्य राजनीति के निर्धारक तत्व 229
डॉ. उपेन्द्र कुमार सिंह

राज्यों की स्वायत्तता के सम्बन्ध में विभिन्न राजनैतिक दलों की मांग 231
डॉ. शैलेन्द्र नाथ सिंह

भारत में संघवाद के प्रति राजनीतिक दलों के दृष्टिकोण 233
डॉ. राजेश कुमार सिंह

ग्लोबल गाँव के देवता : असुर जनजातीय विरासत पर भूमण्डलीकरण का दुष्प्रभाव 236
संजय कुमार सिंह

आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 238
रेनू देवी

उदय प्रकाश के साहित्य में युगबोध के भाव एवं कलात्मक आयाम 241
डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता

किशोरवय विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास : ईश्वरीय ज्ञान (मुरली) के सन्दर्भ में 243
रोशनी चन्द्राकर/डॉ.शोभा श्रीवास्तव

नरेन्द्र कोहली के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में जीवन मूल्य 245
डॉ. सन्जू

मुर्दहिया और मणिकर्णिका में बौद्ध चेतना के स्वर 247
डॉ. रणजीत कुमार

समकालीन राजनीति का जीवंत दस्तावेज : महाभोज 249
स्नेहा शर्मा

रीति कालीन कवि केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका की प्रासंगिकता 251
सुरेश चन्द्र पाल

उग्र की कहानियों में युगीन चेतना 253
डॉ. परषोतम कुमार

परदेशी राम वर्मा के 'सूतक' उपन्यास में सामाजिक जागृति 255
कमल कुमार बोदले/डॉ. अभिनेश सुराना

आधुनिक हिंदी हास्य-व्यंग्य के पुरोधा राधाकृष्ण 257
प्रमोद कुमार

लोक साहित्य : सम्यक् विश्लेषण 260
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता

'विघटन' उपन्यास में चित्रित प्रमुख नारी पात्रों की संवेदना 263
मारुती दत्तात्रय नायकू

जनसंचार माध्यम में हिंदी भाषा का योगदान 266
प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे

सुषमा मुनींद्र की कहानियों में अभिव्यक्त अध्यापक वर्ग का चरित्रांकन 268
कु. अलका ज्ञानेश्वर घोडके

विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसर 271
डॉ. उत्तम थोरात

हिंदी कहानी में स्त्री चेतना के विविध संदर्भ 273
श्रीमती सरला माधव त्रिपाठी

स्त्रीपरक लोकनाट्य 'नकटौरा' में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता के स्वर 275
डॉ. सरस्वती मिश्र

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन 278
डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

'तिरस्कृत' में हाशिये का समाज 280
डॉ. ओम प्रकाश सैनी

जयनंदन की रचनाओं में मजदूर 283
डॉ. गोपाल प्रसाद

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका 285
डॉ. सुनील कुमार

समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिकता: ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में 288
शेख उस्मान सत्तारमियाँ

नई राष्ट्रीय शिक्षण नीति में संगीत शिक्षा और संभावनाएं 291
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सूर्य : रामधारी सिंह 'दिनकर' 294
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

स्त्री पराधीनता की अंतहीन दासतां-राम रहीम 297
डॉ. रमेश यादव

भारत में महिला उद्यमिता व चुनौतियां 299
डा. सुनीता

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 302
आशुतोष कुमार दूबे / डॉ. (श्रीमती) मधुबाला राय

प्रधानमंत्री जन-धन योजना और उत्तर प्रदेश में वित्तीय समावेशन की चुनौतियों का अध्ययन 305
डॉ. जय शंकर शुक्ल

ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के अभाव के कारण 309
डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

विकलांग-विमर्श : दशा और दिशा का मनोवैज्ञानिक अवलोकन (पुस्तक समीक्षा) 311
डॉ सीमा रानी / डॉ मीना पाण्डेय

स्वंय प्रकाश के कथा साहित्य में मार्क्सवाद का प्रभाव 316
स्मिता भारती

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता और माखनलाल चतुर्वेदी 318
डॉ. संजय कुमार मिश्र

हिन्दी शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य 320
अजय कुमार

राजनीति, राजनेता और नागार्जुन 322
अमृता रानी

बाल कहानियों की प्रासंगिकता 324
डॉ. अंजु रानी

'एलिस एक्का की कहानियाँ और आदिवासी स्त्री' 326
मो. आज़म शेख

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में आंचलिकत्ता 328
चन्द्रकला मीना / डॉ. प्रदीप कुमार मीना

'ढिबरी टाइट' कहानी संग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन 331
दीन दयाल सैनी

भारत में राष्ट्रीय एकीकरण एवं आन्तरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ 332
डॉ. दीपक कुमार अवस्थी / डॉ. मृदुला शर्मा

प्रेमचन्द की कथा दृष्टि शिवप्रसाद सिंह 337
डॉ. अजीत सिंह

साहित्य और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'बांझ घाटी' 339
डॉ. अमित सिंह

'राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी फिल्मों की भूमिका' 341
डॉ. ममता

विश्व राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताएं एवं समाधान 344
डॉ. मनीष

नई शिक्षा नीति की अवधारणा और चुनौतियाँ 347
डॉ. नंदन कुमार भारती

कल्पना पत्रिका में विदेशी साहित्य 350
डॉ. निकिता जैन

अज्ञेय के कथा साहित्य में चित्रित पात्रों का कथा में महत्त्व- 353
डॉ. रानी बाला गौड़ / गरिमा वर्मा

पाकिस्तान की माँग और भारत विभाजन का एक ऐतिहासिक अवलोकन 355
डॉ. माया कीर्ति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समग्र आलोचनात्मक अवलोकन 357
जाहन्वी देव

शिक्षातंत्र का बदलता स्वरूप; वैदिक शिक्षा प्रणाली से आरटीई की ओर 359
कनक प्रिया

निबलेट की डायरी:अंग्रेजी प्रशासक की दृष्टि में भारत छोड़ो आन्दोलन 362
डॉ. कुलभूषण मौर्य

देशज आधुनिकता बोध के कवि त्रिलोचन 365
माधवम सिंह

'देहान्तर' नाटक की मूल संवेदना 368
ममता यादव

अस्तित्व को तलाशती शिवमूर्ति की कहानी 'कुच्ची का कानून' 370
मनीष कुमार

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज 372
नगीना मेहरा

आदिवासी साहित्य में राजनैतिक चेतना के स्वर 374
निर्मला मीना / डॉ. अशोक कुमार मीना

नारी का अन्त: संघर्ष और महादेवी वर्मा 376
पूनम शर्मा / डॉ. अरूण बाला

बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका को सशक्त बनाने के विभिन्न आयाम का एक अध्ययन 378
प्रो. (डॉ.) महबूब आलम

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता के काव्य-प्रतिमान 381
प्रो. रसाल सिंह / प्रभाकर कुमार

भारत में न्यायिक सक्रियता एवं जनहितवाद के वर्तमान स्वरूप की विवेचना 384
डॉ. राजेश कुमार शर्मा / डॉ. संगीता शर्मा

उपलब्ध प्रारूपों से परे सामाजिक सिद्धांत: एक विमर्श 387
संदीप कुमार

राष्ट्रोन्नयन की वैदिक संकल्पना 390
संगीता अग्रवाल

औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव और आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास 392
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

19 वीं सदी का आंदोलन और हिन्दी कहानी 395
डॉ. सविता डहेरिया

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श 397
डॉ. उमेश चन्द्र

'वैश्वीकरण और मीडिया' 400
सोनू रजक

प्रेमचन्द की कहानियों में हाशिए का समाज : स्त्री संदर्भ 403
सुनीता जाट

ऋतुराज के काव्य में युवा मानसिकता का सामाजिक संदर्भ 405
सुरेश कुमार वर्मा

नीति-निर्माण एंव नीति को क्रियान्वयन करने में नौकरशाही की भूमिका एक समीक्षा 407
सूर्य प्रकाश/प्रो. (डॉ. विनय सोरेन)

भक्ति साहित्य के अन्य प्रश्न और देवीशंकर अवस्थी 410
विजय कुमार गुप्ता

भारत की आजादी में दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित संपादकीय का अध्ययन 413
बिमलेश कुमार

प्रेमचंद का दलित दस्तक 415
डॉ. जियाउर रहमान जाफरी

आयुर्वेद-शिक्षण:औपनिवेशिक संयुक्त प्रांत (1900ई.-1941ई.) 417
पूजा/डॉ. सतीश चंद्र सिंह

छत्तीसगढ़ राज्य में कोर-पीडीएस के प्रभाव का एक प्रशासनिक अध्ययन (धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में) 420
डॉ. श्रीमती रीना मजूमदार/डॉ. प्रमोद यादव/ बिसनाथ कुमार

नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार 425
निलिशा सिंह

राष्ट्रीय आंदोलन के गांधीवादी चरण में महिलाओं की भूमिका 428
डॉ. चन्दन कुमार

बुद्धकालीन विदेह एवं अंगुत्तराप की भूमि पर पूर्व मध्यकाल में बौद्ध धर्म की उपस्थिति एवं उसका स्वरूप : एक पुरातात्त्विक अवलोकन 431
डॉ. अमिय कृष्ण

''नारी मुक्ति का स्वर मुखरित करती आत्मकथाएं'' (विशेष-सन्दर्भ, एक कहानी यह भी, अन्या से अनन्या) 432
लक्ष्मी गोंड

दार्शनिक चिंतन के आधार पर बहुआयामी व्यक्तित्व रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन 437
डॉ. नीलम श्रीवास्तव

कठोपनिषद के आधार पर नचिकेता का चरित्र चित्रण 440
डॉ. मधु कुमारी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रादुर्भाव में तात्कालीन संस्थाओं का योगदान : एक विमर्श 442
प्रिया कुमारी/डॉ. अंजना पाठक

ऑनलाइन शिक्षा : एक समालोचनात्मक अध्ययन 444
डॉ. अश्वनी

संत दादूदयाल का 'माया' विषयक चिंतन 448
सुनील कुमार

आदिवासी समाज और विज्ञान एवं तकनीकी 450
कविता वर्मा/अनुज

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में अभिव्यक्त भाव-बोध एवं भाषिक चेतना का मूल्यांकन 453
डॉ संजय वर्मा

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति एवं इतिहास:चन्देल वंश के विशेष संदर्भ में 457
डॉ अरविन्द सिंह गौर

आधी आबादी के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ : वाया मीडिया 461
अर्चना यादव, डॉ. जयपाल मेहरा

भारत की विदेश नीति : सुषमा स्वराज के विशेष सन्दर्भ में 464
ऋतु, डॉ. उर्मिला

भारत में कोविड-19 के मध्य प्रवास और विपरीत प्रवासन: समस्याएं और चुनौतियां 467
अरुणा परचा

प्रो. मैनेजर पाण्डेय की साहित्य और साहित्येतिहास दृष्टि! 472
लक्ष्मण

भारत में पत्रकारों पर हमले: पत्रकारिता की अभिव्यक्ति की आजादी को खतरा 475
डॉ. परमवीर सिंह

आचार्य अभिनवगुप्त एवं रूपकों में शान्त रस 476
डॉ. सन्दीप कुमार/डॉ. चांदनी

अनुशासन विषयक तथ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन 481
डॉ. सत्य नारायन (प्राचार्य)/विष्णु दत्त शर्मा

मुगल काल में जहाज निर्माण एक अध्ययन 489
नीलम कुमारी

अफगानिस्तान की बदलती जियोपॉलिटिक्स और शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका 492
प्रो. श्याम मोहन अग्रवाल/डॉ. मोहन लाल जाखड़

आधुनिक राजस्थान में व्यापार एवं वाणिज्य के केन्द्रों का ऐतिहासक अध्ययन 496
डॉ. राजेश कुमार मीना

राजस्थान के ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) का समावेषी एवं सतत विकास में योगदान : एक शोध परक अध्ययन 499
संजू बुटोलिया एवं डॉ. गुलाब बाई मीना

''विकास और पर्यावरण का अधूरा सच मीडिया के परिप्रेक्ष्य में'' 502
डॉ. पार्वती गोसाई

डायन-प्रथा के नाम पर झारखण्ड में महिलाओं की हत्या, उत्पीडन एवं डायन-हत्या पीड़ित परिवारों का मनोवैज्ञानिक स्थिति का अध्ययन और न्यायिक हस्तक्षेप की आवश्यकता की अनुशंसा 505
डॉ. अनीता रंजन

छत्तीसगढ़ राज्य के मुंगेली जिले में अनुसूचित जाति के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषण 508
नितेश कुमार साहू/डॉ. प्रमोद कुमार यादव

भारतीय समाज में बिहार के दलित महिलाओं की स्थिति 512
श्वेता कुमारी

9 अगस्त ''अगस्त क्रान्ति दिवस'' को समर्पित ''राष्ट्र निर्माण और गांधी'' (1947 से 2020 तक) समसामयिक भारत के विशेष संदर्भ में 515
डॉ. आनंद यादव

'मित्रो मरजानी' उपन्यास में नारी मूल्यों का हनन 519
डॉ॰ रीना डोगरा

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि के साहित्य में जनजातीय संवेदना 521
ज्योति कुशवाहा/डॉ. अभिनेष सुराना

छत्तीसगढ़ की पारंपरिक लोकगीतों में सामाजिक परिदृश्य 524
रीना गोटे

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा का योगदान 528
डॉ. संगीता उप्पे

''एकीकृत शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिरूचि का अध्ययन'' 530
डॉ. विनोद कुमार जैन/मिस.रूबी शर्मा

''कोरोना काल मे दिव्यांगजनो में स्वास्थ्यगत् स्थिति का अध्ययन'' 535
विजय मानिकपुरी/डॉ. एल. के. शुक्ला

संस्कृत-साहित्य में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति 538
डॉ. रतीश चन्द्र झा

स्त्री विमर्श के आईने में 21वीं सदी की हिन्दी कहानियाँ 541
डॉ अनीता यादव

दाम्पत्य शोषण के विरुद्ध आत्मचेतस स्त्री-कोमल गांधार और कर्फ्यू नाटक के विशेष संदर्भ में। 544
विमल प्रकाश वर्मा/शोध छात्र–जे.एन.यू.

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षाक्रम का अनुशीलन 547
अमित कुमार दूबे

अंग्रेजी कवि भौली के काव्य में प्रेम भावना तथा सौन्दर्य चेतना 550
डॉ. राखी उपाध्याय

राम कथा में स्त्री, दलित एवं आदिवासी चेतना 553
रागिनी मिश्रा

जैनेन्द्र कुमार के निबंधों में व्यक्ति और समाज 555
डॉ. रोहित कुमार

वर्तमान काल का साहित्य और मीडिया निर्मित संवेदना 558
डॉ. आर्यकुमार हर्षवर्धन

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का लिंग एवं अधिवास के सन्दर्भ में अध्ययन 561
देवेन्द्र प्रताप सिंह/डॉ. रीता सिंह

प्राथमिक शिक्षकों के अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन 564
राघवेन्द्र वीर सिंह/डॉ. अखिलेश चन्द

स्नातक स्तर के कला एवं शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं संवेगात्मक समायोजन अध्ययन का तुलनात्मक 567
डॉ. डी.पी. मिश्र/रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी

''भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास'' 570
रीना कुमारी

महादेवी वर्मा रूकाव्य व्यक्तित्व का विकास 573
डॉ. ममता

ब्रिटिश राज में हिन्दी पत्रकारिता 577
डॉ. विवेक कुमार जायसवाल

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन 584
डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

वेब सीरीज़ की सामाग्री का युवाओं पर प्रभाव का अध्ययन 587
अनुज

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में राजनीतिक संचार के आभासी माध्यमों का प्रादुर्भाव (प्रमुख राजनीतिक दलों और नेताओं का तुलनात्मक अध्ययन) 590
स्नेहाशीष वर्धन

दैनिक जागरण समाचारपत्र में भारतीय प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा का कवरेज: एक अध्ययन 594
डॉ. निरंजन कुमार

भारतीय वैचारिक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में तुलसी काव्य 599
ब्रजेश उपाध्याय

उदय प्रकाश के साहित्य में युगबोध के भाव एवं कलात्मक आयाम 602
डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता/उपदीप कौर

दृष्यचित्रण में समकालीनता के पर्याय : सतीश चन्द्र 605
रुचिन वर्मा

पटियाला दरबार के अल्पज्ञात कवि घनैया और उसकी पांडुलिपियाँ : एक अध्ययन 607
डॉ. सुनीता शर्मा

"मोहन राकेश के प्रमुख नाटकों का तात्विक अनुशीलन" 610
उमा हरदेल/डॉ. दीनदयाल दिल्लीवार

ओमप्रकाश वाल्मीकि का दलित दर्शन 613
दिलना के

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ 616
प्रो. विरेन्द्र सिंह कश्यप

स्त्री पराधीनता की अंतहीन दासतां-राम रहीम 619
डॉ. रमेश यादव

रणेन्द्र के साहित्य में अभिव्यक्त आदिवासी समाज 621
मनोज कुमार जायसवाल

उच्च शिक्षा में निजीकरण : चुनौतियां एवं संभावित समाधान 623
डॉ सुनीता सिंह/सुश्री सीता पाण्डेय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक विश्लेषण 628
डॉ. हेमलता बोरकर वासनिक

समकालीन मानवीय भयावहता और 'एक कंठ विषपायी' का संदर्भ 631
श्री दीपक प्रभाकर वरक

औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव और आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास

डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

भारतीय संस्कृति के निर्माण में आदिवासी संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। लोक से गहन जुड़ाव होने के कारण आदिवासी संस्कृति बहुत समृद्ध रही है। उनके रीति–रिवाज, परंपरायें, कलायें, साहित्य इत्यादि मानव जाति की अमूल्य धरोहर हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि इतनी समृद्ध वरासत के बावजूद आज आदिवासी संस्कृति विकास की अंधी दौड़ में गंभीर संक्रमण के दौर से गुजर रही है। 21वीं सदी में आदिवासी समाज के समक्ष दोहरा संकट खड़ा हो गया है। एक तरफ वो अन्याय और पोषण से मुक्ति के लिये संर्घषरत हैं तो दूसरी ओर उन्हें अपनी संस्कृति को बचाये रखने के लिये भी संघर्ष करना पड़ रहा है। विकास के नाम पर अन्धाधुन्ध और अनियोजित औद्योगीकरण से आदिवासी जीवन बहुत गहरे तक प्रभावित हुआ है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश के समग्र विकास के लिए अनेक योजनायें चलायी गईं। बहुत से आधुनिक प्रकार के उद्योग स्थापित किये गये हैं। इन विकास योजनाओं से यह अपेक्षा की गई थी कि इनसे जनजातियों के आर्थिक विकास में त्वरित वृद्धि होगी लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी अधिकाश जनजातियाँ ऐसे क्षेत्रों में निवास करती हैं जो वन, खनिज, तथा अन्य अनेक प्राकृतिक संसाधनों में अत्यंत संपन्न हैं। इन संसाधनों के दोहन में जनजातियों की उल्लेखनीय भूमिका होने के बावजूद उन्हें इसका लाभ नहीं मिल पाया है।

निश्चय ही औद्योगीकरण से देश के विकास में उल्लेखनीय प्रगति हुई है और यह अब भी निरंतर जारी है, लेकिन जहाँ तक आदिवासियों की बात है, उन्हें देश के इस विकास का कोई सकारात्मक लाभ नहीं मिला है। इसके चलते आदिवासियों की परंपरागत जीवन षैली तो नष्ट हुई ही है, उनका शोषण भी बढ़ा है। पहले जहाँ आदिवासी जंगल की स्वच्छ हवा में साँस लेते थे वहीं अब तमाम फैक्ट्रियों के लग जाने से उनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। संजीव के 'पाँव तले की दूब' उपन्यास का समीर अखबार में एक रिपोर्ट लिखता है–''प्लांट बनने के पहले इन गाँवों की माली हालत क्या थी और अब कैसी है? योजनाओं में ऐसे प्लांटों का उद्देष्य आसपास के गाँवों में बिजली पहुँचाना भी था। मगर यह बिजली रेल कंपनियों, कोलियरियों, महानगरों और सेठों के कारखानों को भले जाए, ये गाँव अभी भी अँधेरे में डूबे हुए हैं। जब से प्लांट बना है, चिमनी से उड़ने वाली राख और गैसों के चलते प्रदूषण बढ़ा है और जमीन बंजर होती चली गयी है। अब इन गाँवों के खेतों में पहले का एक चौथाई अनाज भी पैदा नहीं होता। रोजी–रोजगार का यह हाल है कि प्लांट बनने से पूर्व जो उम्मीद थी कि स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, वह उम्मीद पूरी नहीं हुई। मुश्किल से दो प्रतिशत स्थानीयों को काम मिलता है। कुछ प्लांट के ठेकेदारों के तहत षोशित हो रहे हैं, बाकी बेसहारा।''[2]

औद्योगीकरण से उपजी पीड़ा को संजीव ने 'धार' उपन्यास में बहुत बारीकी से चित्रित किया है। गाँव में तेजाब की फैक्ट्री के लगने से सारे गाँव की परंपरागत जीवन शैली नष्ट हो गयी है। 'धार' उपन्यास में मोड़ल अपने मामा से इस संबंध में चिंता जाहिर करते हुए कहता है–''पहले खेती में तीन महीने का मोटा–मोटा अनाज भी तो मिल जाता था और अब जब से फैक्टरी खुला– एक तिरिन भी नहीं। एक्को कुआँ पोखरा का पानी पीने लायक रह गया है? बाहर राँची, हजारीबाग से बुलवाकर बेचारे आदमी लोगों को यहाँ रोजी देने के लिए ले आये थे कि जान–मारने के लिए, केतना बेकत (व्यक्ति) खाँसते–खाँसते बेमार होके भागा। हमको सोचा, सौंताल आदिवासी हैं, का करेगा? हमी लोग का छाती पे खोलना था जहर का फैक्टरी?''[3] संजीव 'धार' उपन्यास में ही औद्योगीकरण और उससे आम आदिवासी के जीवन में आये असुरक्षा के गंभीर संकट के बारे में षर्मा बाबू के माध्यम से आगे कहते हैं– ''यह धन भी दो–तीन महीने से ज्यादा नहीं खींच पाता, चोरी से कोयला काटने–बेचने का काम भी पर्याप्त नहीं है, फिर दूर–दूर के ठेकेदार आते हैं, इन्हें सस्ती मजदूरी पर काम के लिए ढोर डाँगरों की तरह हॉक ले जाते हैं। सोचिए, कितने आश्चर्य की बात है कि धान के खेत, इतनी कोलियरियाँ और छोटे से लेकर चितरंजन और केबुल्स के बड़े कारखाने होते हुए भी इनकी जिंदगी में कोई सुरक्षा नहीं।''[4]

औद्योगीकरण की समस्या का एक पहलू यह भी है कि किसी परियोजना के दुष्प्रभावों का बिना उचित मूल्यांकन किये जल्दबाजी में ऐसी जगहों पर स्थापित कर दिया जाता है, जो पर्यावरण के दृष्टिकोण से तो हानिकारक होती ही हैं, गाँव की आत्मनिर्भर व्यवस्था को भी

तहस–नहस कर देती हैं। 'धार' उपन्यास में संजीव लिखते हैं–''झोपड़ों का सिलसिला फैक्टरी की ओर ऐसे खिंचता चला गया है, जैसे आग की लौ के पास पतंगे और झुलसकर फिर जहाँ–तहाँ छितरा गया है। उनके गूदड़, प्लास्टिक या फूस हिलते हैं तो लगता है वे रह–रहकर छटपटा रहे हैं। धरती के गूमड़ों से उभरे ये बौने घर दूर–दूर के सूखते पेड़ों, सूखती हरियाली को देखा करते हैं। बरसात के तीन–चार महीनों में पानी पाकर फिर से पनपी हरियाली और ये धान के खेत इस स्थिति से जूझने की जी–जान से कोशिश करते हैं लेकिन कब तक –?''[5] 'धार' उपन्यास में ही शर्मा बाबू बाँसगड़ा गाँव की तेजाब की फैक्टरी के संबंध में मंगर से आगे कहते हैं–''हवा जब गाँव की ओर घूमती है तो अपनी रही–सही जान लिए बाँसगड़ा खाँसता है – न, बाँसगड़ा नहीं, उनकी उंगली फैक्टरी की ओर उठ रही थी, वह उजली–उजली फफूंदी की झुर्रियों में लरजती तेजाब की फैक्टरी खाँसती है, अपनी धीमी–धीमी बत्तियों की बुझी आँखों की चिलम में गाँव को भरकर पीते और साँसों की खुश्क आवाज के साथ उजला–उजला जहर उगलती हुई फैक्टरी।''[6]

अंधाधुंध औद्योगीकरण के युग में आम आदिवासी मजदूर की सुरक्षा को लेकर भी कोई ठोस नियम–कानून नहीं बने हैं। जो पुराने कानून हैं भी उनका सतही तौर पर भी पालन नहीं किया जाता है। मजदूरों की जिंदगी की सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। 'सीता' उपन्यास में इस संबंध में रमणिका गुप्ता लिखती हैं–''सीजन में वर्टिकल कटिंग (सीधी कटाई) शुरु कर कोयला निकालने की फिक्र होती है ठेकेदारों को। कानूनन तो जितनी सीमा की उँचाई हो उतना ही चौड़ा बेंच रखना होता है, पर दो फिट से ज्यादा कोई बेंच कैसे रखता? उन्हें मुनाफा करना है, मजदूरों की सुरक्षा नहीं। और मजदूर भी कमाने के चक्कर में स्वयं की सुरक्षा की अनदेखी करते।''[7] औद्योगिक समाज में सत्ता शोषण के विभिन्न तरीके अपनाती है। गरीब आदिवासी मजदूर ठेकेदार और पुलिस के जाल में किस तरह धीरे–धीरे पिसता है, इसका यथार्थ चित्रण करते हुए 'सीता' उपन्यास की लेखिका लिखती है–''ठेकेदारों की दासी था थाना। पुलिस के लिए तो ये खदाने लक्ष्मी थीं उनकी। कोई मरता तो पैसा मिलता, फिर तहकीकात करने की जहमत क्यों उठाएँ? इसलिए चारों तरफ मची पैसे की लूट में मजदूर की जिंदगी की क्या कीमत हो सकती है भला? हाँ, आपस में दारू पीकर लड़ जाते थे मजदूर, तो थाना के प्रिय पात्र हो जाते थे। क्योंकि दोनों पक्ष पैसा देते थे। सुलह होने पर भी थाना में पैसा भरना जरूरी था और केस लड़ने से तो चाँदी काटता थाना – ठेकेदार ही अपनी तरफ से पैसा भरकर, उनकी मजदूरी से थाना–खर्च काट लेता था। बिना माँगे दिये गए कर्ज पर ठेकेदार को मनचाहा सूद तो मिलता ही था।''[8] संजीव का ही एक अन्य उपन्यास 'सावधान! नीचे आग है' कोयला खदानों के दमघोंटू माहौल में जीने के लिए अभिशप्त मजदूरों की जीवन गाथा है। 'सतह के नीचे' और 'सतह के उपर' शीर्षकों में यह उपन्यास बंटा हुआ है। संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से कोयलांचल के अमानवीय शोषण एवं दमन को सम्पूर्ण भारतीय परिवेश में देखने का प्रयास किया है। वे भारत के तमाम खान मजदूरों की दर्दनाक जिंदगी की जीती–जागती तस्वीर हमारे सामने उकेरते हैं। ''जो व्यवस्था झरिया के कोयलांचल के लाखों लोगों की जान से खेल रही है वही पूरे देश के खदानों में कार्यरत मजदूर परिवारों की बदहाली के लिए भी दोषी है।''[9]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश ने आर्थिक मोर्चे पर काफी प्रगति की है। लेकिन इस विकास का लाभ देश के हरेक क्षेत्र में समान रूप से नहीं पहुँचा है। खासकर भारत के गाँव आज भी विकास की मुख्यधारा में शमिल होने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि ऐसा कहना तर्कसंगत नहीं है कि देश के सभी गाँव विकास से अछूते रहे हैं लेकिन यह सच है कि कुछ क्षेत्रों का विकास काफी अधिक हुआ है जबकि अधिकाश क्षेत्र अभी भी पिछड़े हुये हैं। खासतौर से देश के विकसित राज्य जैसे पंजाब, हरियाणा, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और गुजरात आदि इस मामले में काफी आगे रहे हैं। समस्या यह भी है कि एक ही राज्य के अलग–अलग भागों में भी विकास के स्तर में अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए अगर हम उत्तरप्रदेश को देखें तो हम पाते हैं कि संपूर्ण प्रदेश के स्तर पर यह एक पिछड़ा प्रदेश है जबकि उत्तरप्रदेश का पष्चिमी भाग तुलनात्मक रूप से काफी अच्छी स्थिति में है। इसी तरह से मध्यप्रदेश को अगर हम देखें तो पूरा प्रदेश तो प्रायः अविकसित है पर वहाँ का मालवा क्षेत्र काफी समृद्ध है। इसी तरह हम देखते हैं कि देश के आदिवासी भागों में विकास अभी भी बहुत दूर की बात है। देश के अधिकतर आदिवासी बहुल जनसंख्या वाले गाँवों में मूलभूत सुविधाएँ तक उपलब्ध नहीं हैं। स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब सरकारी कागजों में तो विकास पूरा हो चुका होता है और असल में वह क्षेत्र पिछड़ा ही बना रहता है। 'शैलूश' उपन्यास में पुरुषोत्तम काछी बिहारी से इस संबंध में अपनी चिंता प्रकट करता है –''शोर है कि सारे भारत में हरित क्रांति हो गयी। पर महाइच के इस रेवतीपुर गाँव को देखो। कहने को रेवतीपुर–कैनाल नक्शे पर लटक रही है और वह पूरे गाँव को खेती के लिए पानी भी पहुँचा रही है, पर पाँच साल से रेवतीपुर कैनाल या माइनर्स का पानी कहाँ चला जाता है, पता नहीं। लोग कहते हैं कि जल्दी ही लिफ्ट कैनाल चलने वाली है। उसके आने पर पूरे क्षेत्र में हरित क्रांति आ जायेगी। राम जाने सोने की बालियों में सरसराती हवा के लहरदार घाघरे को देखना भाग में है या नहीं। खूब सपना दिखा रही है तकदीर। परसों गया था बनारस। मामाजी के कमरे में टेलीविजन पर लहराती फसल, राषि–के–राषि गेहूँ, उन्हें बेंचकर सूप से गिराये जाते रुपये। यूरिया बेचने वालों के इन विज्ञापनों से हरित क्रांति आयेगी भइया? मैंने ऐसा कभी देखा ही नहीं कि तपती गरमी में चिड़ियों के लिए भी पीने लायक पानी रहता हो कैनाल में।''[10]

आजादी के बाद देश के विकास की सैकड़ों योजनाएँ बनायी गयी हैं। बहुत सारी योजनाओं में आदिवासी क्षेत्रों

को भी षामिल किया गया है। यहाँ तक कि तमाम योजनाएँ केवल आदिवासियों के लिए ही बनायी गयी हैं लेकिन न तो उनका उचित तरीके से कार्यान्वयन हो सका और न ही विकास का लाभ आम आदिवासी को मिल पाया है। 'पठार पर कोहरा' उपन्यास में लेखक राकेष कुमार सिंह ने बहुत बारीकी से इस स्थिति का चित्रण किया है। लेखक लिखते हैं–''आजादी के बाद आदिवासियों के कल्याण की सैकड़ों योजनाएँ बनती हैं पर उनके क्रियान्वयन का क्या हुआ? आवंटित राषि का दस प्रतिषत भी देश के आदिवासियों तक नहीं पहुँच रहा। कई योजनाएँ कागज पर चलती रहती हैं। कई योजनाएँ तो फाइलों की कब्र में ही दफन हो गयीं –।''[11] इसी उपन्यास के प्रमुख पात्र मास्टर संजीव योजनाओं की दुर्दषा पर सोचते हैं –''आदिवासियों के विकास के कार्यक्रम चलते हैं, परंतु कार्य की प्रगति देखने वाला कोई पर्यवेक्षक नहीं है। 'संषोधित क्षेत्रीय विकास अभिकरण' (माडा) द्वारा प्राप्त राषि साल के अंत में बिना खर्च किए वापस लौटा दी जाती है। 'वनवासी सेवा केन्द्र' और 'इण्डियन नेषनल ट्रस्ट फॉर द वेलफेयर ऑफ ट्राइवल्स' (इंचाट) की जनगणनाओं में गजलीठोरी का अस्तित्व ही नहीं है। फिर तो 'ट्राइबल सब–प्लान' के गजलीठोरी तक पहुँचने का प्रष्न ही नहीं उठता।''[12] लेखक आगे फिर कहता है कि–''हर नयी परियोजना ने आदिवासियों या अन्य जनता का भला किया हो या नहीं, पर ठेकेदारों – बिचौलियों की एक नयी जमात को अवश्य जन्म दिया है। परियोजनाएँ परिकल्पित होते ही ब्लाक से तहसील तक पदाधिकारियों की आँखों में एक हिंस्र चमक अवश्य पैदा करती हैं। ठीक वही चमक जो अपने निर्बल शिकार पर घात लगाए चीते की आँखों में होती है।''[13]

निश्चय ही ये स्थितियां अत्यधिक चिंताजनक हैं। तमाम प्रयासों के बावजूद आज भी आदिवासियों के जीवन–स्तर में कोई बड़ा बदलाव नही आया है। वे जीवन की मूलभूत सुविधाओं के लिए लगातार संघर्ष कर रहे हैं। औद्योगीकरण से उनकी परंपरागत आत्मनिर्भर जीवन–शैली बुरी तरह प्रभावित हुई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आदिवासी क्षेत्रों में विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के पूर्व उनके दीर्घकालीन नुकसान का पेशेवर आंकलन किया जाय और आदिवासियों के शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार का मजबूत वैकल्पिक ढांचा विकसित किया जाय। उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया जाय साथ ही योजनाओं के प्रबंधन में आदिवासियों की निर्णायक हिस्सेदारी हो, तभी हम विकास योजनाओं के प्रतिकूल प्रभाव को कम कर सकते हैं।

संदर्भः–

1. हसनैन, नदीम, जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, नई दिल्ली, छठा संस्करण 2004, पृ. 239
2. संजीव, पांव तले की दूब, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995, पृ. 59
3. संजीव, धार, राधाकृष्ण प्रकाषन, नई दिल्ली, आवृत्ति 1997, पृ. 20
4. वही, पृ. 38
5. वही, पृ. 37
6. वही, पृ. 37
7. गुप्ता, रमणिका, सीता, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996, पृ. 8
8. वही, पृ. 8
9. जलील, डॉ. वी.के. अब्दुल (संपादक), समकालीन हिन्दी उपन्यासः समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ. 209
10. सिंह, शिवप्रसाद, शैलूष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989, पृ. 30
11. सिंह, राकेश कुमार, पठार पर कोहरा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2005, पृ. 137
12. वही, पृ. 178
13. वही, पृ. 179
14. सिंह, शिवप्रसाद, शैलूष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989, पृ. 162
15. संजीव, धार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, आवष्त्ति 1997, पृ. 56

सहायक प्राध्यापक हिन्दी,
शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर,
जिला–बलरामपुर–रामानुजगंज
(छ.ग.)–497119